जीवन सद्मार्ग प्राप्ति दीक्षा

मनुष्य का मस्तिष्क सदैव से ही अपनी जिज्ञासा, कल्पना और प्रगति की चाह के कारण सर्वथा नवीन और आधुनिक चीजों पर केन्द्रित रहा है। आधुनिक युग में भौतिकता, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण मानवीय और नैतिक जीवन मूल्यों (जैसे—सत्य, करुणा, ईमानदारी और बड़ों का सम्मान) का तेजी से क्षरण हो रहा है। जिसके कारण जीवन में तनाव, अवसाद, चिन्तायें व्याप्त हो रही हैं तथा संस्कारों का ह्रास होता जा रहा है। तनाव आदि बढ़ने से व्यक्ति, विशेषकर युवा वर्ग में धैर्य और सहनशीलता कम होती जा रही है, जिसके कारण समाज में अपराध और हिंसा बढ़ रहे हैं।

इंटरनेट और डिजिटल तकनीक की व्यापक उपलब्धता ने ध्यान भटकाने वाले अनगिनत स्रोतों से हमें एक साथ जोड़ दिया है। डिजिटल शोर ने हमारे दिमाग को बहुत नुकसान पहुंचाया है जिसके कारण हमारी इच्छाशक्ति अत्यधिक कमजोर सी हो गयी है। एक औसत व्यक्ति का ध्यान (Attention Span) केवल 8 सेकंड तक ही सीमित रह गया है। यह एक गोल्डफिश (मछली) से भी कम है, और इसका सबसे बड़ा कारण स्मार्टफोन और सोशल मीडिया जैसे तंत्र हैं। ऑफिस में काम करने वाला व्यक्ति हर 45 सेकंड में अपना काम बदलता है या बीच में ही फोन चेक करने लगता है। आज समाज में सफलता का पैमाना धन-दौलत और दिखावा बन गया है। इससे 'सादा जीवन और उच्च विचार' के मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। इन सब क्रियाओं के फलस्वरुप उसे चिंता, तनाव, अवसाद और कम नींद, किसी विषय में ध्यान न लगने जैसी विकराल स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, जो इस समस्या को गंभीर बनाते हैं। मनुष्य विशेषतः युवा वर्ग स्वयं के ही पैर में कुल्हाड़ी मारने का कार्य कर रहे हैं।

आज मनुष्य का जीवन किसी भी दृष्टिकोण से सुरक्षित नहीं है। एक तरफ जहां युवा वर्ग मानसिक तनाव, गलत संगति और पारिवारिक संवाद में कमी आदि के कारण नशे जैसी बुरी प्रवृत्ति में फंस रहा है वहीं चारों और असंतोष, हिंसा और विध्वंशक ताकतें फैली हुई हैं। एक ओर जहाँ हम सभ्यता के विकास के लिए आधुनिक आविष्कार कर रहे हैं तो दूसरी ओर हथियारों का भी उसी रफ़्तार से निर्माण हो रहा है। हिंसा और आतंक इतना फैल चुका है कि अब मृत्यु की एक दिशा नहीं है बल्कि संसार के प्रत्येक कोने में मृत्यु व्याप्त है। जिसके फलस्वरुप तनाव, भय और दुःख व्याप्त हो जाता हैं, जैसे कि हम पहले ही असफल हो चुके हों।

एक लोकोक्ति है कि 'वर्तमान के क्षणों में जीना ही सुखी और संतुष्टिदायक जीवन की कुंजी है।' एक सुयोग्य व्यक्तित्व की विशेषता यही है कि उसके अन्दर सुसंस्कार व्याप्त हो। चुंकि दीक्षा मनुष्य को दक्ष बनाता है, अतः इस दीक्षा को ग्रहण करने वाले साधक की विशेषता यही है कि उसे पूर्ण रुप से सद्मार्ग की प्राप्ति हो सकेगी जिसके फलस्वरुप वह विवेकशील होते हुये अपने जीवन के छोटे-बड़े निर्णय स्वयं ले सकने में समर्थ हो पायेगा। उसके अन्दर एक ऐसी चेतना व्याप्त होती है जिससे वह अपने माता-पिता का आदर करता हैं। साथ ही वह सामाजिक मूल्यों को कुशलता से समझना शुरु कर देता है।

ये मूल्य, साधक व मानव समाज का ऐसा सोना है जिससे उसके सारे कार्य-व्यापार और व्यवहार का सम्मान विस्तारित होने लगता है। दूसरे शब्दों में कहें तो ये मूल्य, मानव को और अत्यधिक मूल्यवान बनाते हैं। मानव एक विचारशील और चेतन प्राणी होने के नाते अपने जीवन मूल्य और प्रधानताओं को जानना चाहता है। इस दीक्षा के फलस्वरुप जब साधक का वांछित विकास होना प्रारम्भ होता है तो उसे आंतरिक आनंद की अनुभूति होती है जो किसी चमत्कार से कम नहीं होता तथा जिसका वर्णन करने के लिये शब्द और व्याख्यायें भी सीमित हो जाती हैं।

जीवन सद्मार्ग प्राप्ति दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648
न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460
Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490
आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966
सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।